अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तेरापंथ दर्शन (वर्ष : 2024) दिनांक : 21.12.2024

समय सीमा : 3 घंटा प्रथम वर्ष : द्वितीय प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

भिक्षु विचार दर्शन–80

प्र. 1 किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए– 10

(क) लौकिक धारा का साध्य क्या है?

(ख) आत्म-संयम की कमी किस पर काबू पाने में अड़चन पैदा करती है?

(ग) सम्प्रदाय बहुत है, यह कोई बहुत बड़ा दोष नहीं है। बड़ा दोष क्या है?

(घ) आचार्य भिक्षु ने अन्तिम निर्णायक आचार्य को माना। फिर भी उन्होंने उचित स्थान किसे दिया?

(ड़) जो लोग असंयम के सेवन में धर्म बतलाते हैं, वे किसका विघटन करते हैं?

(च) पुस्तक के संदर्भ में विवेक का अर्थ क्या है?

(छ) गुरु का भावात्मक अर्थ क्या है?

(ज) किसने लिखा–भगवान की आज्ञा से ही चारित्र की आराधना की जाती है।

(झ) उद्दिष्ट आहार किसे कहते हैं?

(ञ) नव निर्माता कौन है?

(ट) साधना की दृष्टि से मूल्यवान मर्यादायें कौन सी हैं?

(ठ) धर्म वैयक्तिक होता है, किन्तु वह शासन का रूप कब लेता है?

प्र. 2 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दो या तीन वाक्यों में दीजिए– 10

(क) संसार की आवृत्ति कैसे होती रहती है?

(ख) माता-पिता की सेवा का लौकिक और लोकोत्तर रूप क्या है?

(ग) क्रोध के आवेश से परिपूर्ण मनोदशा में एक विचित्र प्रकार की उछल-कूद होती है। पुस्तक में उसका वर्णन किन शब्दों में है? लिखें।

(घ) 'भिक्षु विचार दर्शन' कृति के आदि में, अंत में और मध्य में क्या है?

(ड़) आचार्य भिक्षु के किस कथन से उनके दयार्द्र मानस का परिचय मिलता है?

(च) किस प्रकार का विश्वास दाक्षणिक बंध है?

प्र. 3 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर 100 से 150 शब्दों में दीजिए– 28

(क) आचार्य भिक्षु ने धर्म के व्यापक स्वरूप को कैसे प्रकट किया?

(ख) सावद्य दान और सावद्य दया दोनों ही मुक्ति के मार्ग नहीं हैं, स्पष्ट करें।

(ग) प्रमादपूर्ण जीवन और मृत्यु में क्या अन्तर है? प्रसंग से समझायें।

(घ) कष्ट निवारण क्यों, कैसे और किसका किया जाए, समाजधर्म और आत्मधर्म की भूमिका पर बतायें।

(ड़) लौकिक कर्त्तव्यों और लोकोत्तर कर्त्तव्यों को एक मानने से मोक्ष के सिद्धान्त पर प्रहार होता है, कैसे? स्पष्ट करें।

(च) जीना, जिलाना और जीने का अनुमोदन करना तीनों समान कैसे है?

प्र. 4 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दें– 32

(क) आचार्य भिक्षु के दान दया के सिद्धांत को विस्तार से समझायें।

(ख) भगवान महावीर एवं प्राचीन समय की संघ व्यवस्था के बारे में बताते हुए आचार्य भिक्षु द्वारा की गई संघ व्यवस्था पर प्रकाश डालें।

(ग) आचार्य भिक्षु ने विनीत-अविनीत का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किन तथ्यों के आधार पर कैसे किया? बतायें।

भिक्षु वाणी–20

प्र. 5 कोई दो पद्य अर्थ सहित लिखें– 8

(क) दया.....नजीक।

(ख) पेम.....धिकार।

(ग) ज्यूं अविनीत.....दुख पावे।

(घ) समझ.....ताणें।

प्र. 6 किन्हीं दो पद्यों की पूर्ति करें– 6

(क) जेहने.....खाय।

(ख) छ काय.....आय।

(ग) ज्यां लग.....जाय।

(घ) कूआ.....मीठ।

प्र. 7 निम्नलिखित में से दो विषय से संबंधित कोई दो पद्य लिखें– 6

(क) परख।

(ख) अनुकम्पा।

(ग) दान।

(घ) अज्ञानी।